|| युवा कमान राष्ट्रीय उत्थान ||

युवा अर्थात वह शौर्य पुंज जो तूफान को मोड़ने की ताकत है। मानवीय–सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान का प्रतीक है युवा,बशर्ते इस शौर्य पुंज की राष्ट्रीय एवं मानवीय–राष्ट्रीय विकास में सही भागीदारी सुनिश्चित हो परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि यही नही हो रहा है इस युवा शौर्यपुंज को भ्रम में रखा जा रहा है । युवा प्रचार–प्रसार का माध्यम भर रह गया है। स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में केवल मनुष्यों की आवश्यकता है और सब कुछ हो जायेगा किन्तु आवश्यकता है वीर्यवान,तेजस्वी,श्रद्धासम्पन्न और अन्त तक कपटरहित नवयुवकों की । इस प्रकार के सौ नवयुवकों से संसार के सभी भाव बदल दिये जा सकते है । स्वामीजी के ये विचार कुसुमित हो सकते है परन्तु शर्त है कि देश के युवाओं को मौंका मिले । बाल्यकाल से उन्हें ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिसमें सद्भावना,समरसता,नैतिकता,मानवीय समानता,चरित्र निर्माण,मानसिक शक्ति में बढोतरी,बुद्धि विकसित और अपने पैर पर खड़ा करने के सामर्थ्य के साथ राष्ट्रहित समाहित हो परन्तु इस देश में समान शिक्षा तक की नीति नही है। बाल्यकाल से उसके सामने भेदभाव,भ्रष्टाचार,अत्याचार एवं अन्य बुराईयों का ताण्डव होने लगता है वह इस कोयले की कोठरी से बचे तो कैसे ? यह चिन्तन का विषय हो गया है । युवाओं को उनका अधिकार कैसे मिले ? अगर इस समस्या पर दृष्टिपात किया जाये तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि युवाओं की राह में कांटे के रूप में सफेदपोश प्रथमदृष्टया नजर आते है और दूसरे नौकरशाह है । देश दुनिया का सबसे बडा लोकतन्त्र है परन्तु आने देश में युवाओं का कितना प्रतिनिधित्व है,शोध का मुद्दा है । होना तो ये चाहिये कि कम से कम पचहत्तर प्रतिशत देश का प्रतिनिधित्व युवाओं के हाथ में होना चाहिये परन्तु हामरे देश का प्रतिनिधित्व तो जन्मसिद्ध अधिकार हो गया है जिसके हाथ में एक बार सत्ता की डोर लगी गयी तो वह पक्के आम की दशा में भी कुर्सी से चिपका रहता है, जीवन पर्यन्त कुर्सी नही छोड़ता है । इतना ही नही मरने के बाद उसके वारिस को सत्ता वरासत के रूप में मिल जाती है और यह कुचक्र कभी नही खत्म होता और युवा अपने हकों से वंचित रहता है। यही हाल अफसरशाही की भी है जोड़तोड में माहिर लोग एक्सटेंशन पर एक्स्टेंशन लिये जाते है और अपने भाई–भतीजों की नौकरी सुरक्षित किये रहते है। इसी खूनी कुचक्र की देन है आतंकवाद, नक्सलवाद,भष्ट्राचार, क्षेत्रवाद, भाई–भतीजावद जातिवाद । सत्ताधारियों को खुद की फिक्र के अलावा न तो देश की फिक्र है ना युवाओं के भविष्य की । ऐसे माहौल मे युवाओं का विकास हो तो कैसे ? जबकि युवा कमान राष्ट्रीय उत्थान का ही नही सम्मान का पत्रीक भी है।

देखने में आ रहा है कि सभी राजनीतिज्ञ पार्टिया युवाओं की बात कर रही है पर वास्तव में वे सत्ता हथियाने के लिये उपभोग कर रहे है । यदि वे युवाओं को उनका हक देते तो अधिकतर मन्त्री महोदय जो कुर्सी से चिपके रहने का षणयन्त्र रचते रहते है वे युवाओं को मौका देते और वे खुद सहयोगी साबित होते परन्तु ऐसा हो नही रहा है वे खुद कुर्सी पर चिपके रहते है और युवाओं का दुरूपयोग करते है । सत्ता और नौकरशाही दोनों रास्तें युवाओं के लिये बन्द जैसे है खासकर कमजोर वर्ग के लिये जो सक्षम है वे दूसरे विकल्प खोज लेते है, विदेश की ओर रूख कर लेते है जो अक्षम है पढलिखकर गरीबी के दलदल में फंसे ही रहते है । युवाओं को मौके ही नही मिल पाते है यदि युवाओं को तरक्की के मौके मिलते तो वे पलायन क्यों करते,आत्महत्या जैसा जघन्घ अपराध

क्यों करते । देश के विकास की खूब ढोली पीटी जाती है पर इस विकास में युवाओं की भागीदारी कितनी है। अगर निष्क्ष पड़ताल होतो युवा नाममात्र के मिलेगे यदि मिलेगे भी तो वे आग की दरिया को पार कर आये होगे ऐसे बहुत कम होगे । होना तो ये चाहिये कि इतने बड़े देश में युवानीति निर्धारित हो जिसमें पढाई लिखाई के बन्दोबस्त योग्यतानुसार सहित रोजगार की गारण्टी हो । देखने में आता है कि योग्य पढे लिखे–धक्के खाने को मजबूर है,पहुंचवाले अयोग्य होकर भी योग्य बन जाते है और सारे विकास के रास्ते उनकी चौखट तक जाते है और बेचारे हाशिये का युवा विकास की बांट जोहता बूढा हो जाता है । यह सब इसलिये हो रहा है कि हमारे देश में युवानीति नही है। एक बार राजनीतिज्ञ पद हथिया लिये तो दांत से पकड़े रहना है जीवन भर । ऐसी स्थिति में कैसे मौका मिलेगा ? योग्य युवाओं को । हमारे देश का चलन है कि बूढा मजबूत पकड़ वाला अर्थात जोड़तोड में माहिर व्यक्ति मन्त्री बनता है जब तक उसकी पार्टी की सत्ता है तब तक पद उससे छूटेगा नही । यदि कहा जाये कि युवाओं को सत्ता से दूर रखने का अघोषित षणयन्त्र है तो गलत नही होगा । यही हाल श्रम की मण्डी का भी है वहा भी कर्मठ,ईमानदार,वफादार और योग्य लोगों के प्रमोशन नही हो पाते । अयोग्य और श्रेष्ठ बाजी मार जाते है और हकदार को धकिया दिया जाता है उसके सपने रौद दिये जाते है । ये कैसा अन्याय है ऐसा नही कि इस अन्याय की खबर शीर्षस्थों को नही है भरपूर है पर उन्हे भी तो आगे पीछे घूमने वालों लोगों की जरूरत होती है। वे चाटुकारिता के मोह में उलझे हुए अन्याय को बढावा देते रहते है । चाटुकारिता की नांव पर सवार लोग स्वार्थ के समन्दर को पार तो कर लेते है पर इस सफर में कई होनहार, कर्मठ,ईमानदार,वफादार और योग्य लोगों के भविष्य का कत्ल कर जघन्य अपराध कर जाते है । इस अपराध के घेरे में वे कभी नही आ पाते । निरापद युवा जीवन भर के सजा भागीदार बन जाता है ,बेरोजगारी,अभाव के दलदल में फंस जाता है । कुछ लाचार होकर बुरे धंधों को अपना लेते है । सही मायने में युवा गलत राह पर जाते नही है ढकेल दिये जाते है । सत्ता के शिखर पर बैठे लोग अपने स्वार्थ में इतना भ्रमित हो जाते है कि युवाओं की तरक्की उनके एजेण्डे से निकल ही जाती है जबकि युवा विकास हेतु कार्ययोजना सर्वप्रथम बननी ही नही क्रियान्वयन भी होना चाहिये क्योंकि युवा कमान राष्ट्र का उत्थान है ।

माना जाता है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है,सही भी है परन्तु भाग्य के निर्माण के लिये मौके मिले तब ना कोई भाग्य संवार सकेगा । मौके ही आकाश से गिरी अमृत की तरह कौवे, गिद्ध लपक लेगे तो नीचे तक तो आ ही नही सकती तो तकदीर कैसे संवर सकती है । किसी भी युवा को चाहे वह जिस जाति,समाज अथवा धर्म का हो उसे अवसर मिलेगे तभी वह तरक्की कर सकता है । उसके अवसर छिन लिये जाये तो कैसे तरक्की सम्भव है । यही हो रहा है तभी तो बेरोजगारो की भीड़ है, चपरासी अथवा सफाईकर्मी की नौकरी के लिये ग्रेजुएट युवा पंक्तिबद्ध है । ये कैसा दुर्भाग्य है ? कहा जा रहा है कि भारत युवाशक्ति है पर युवाओं के कल्याण के लिये कौन सी नीति लागू है । दुनिया इक्कीसवी सदी में जी रही है पर हमारे देश का युवा छुरी की धार पर चल रहा है,फिर भी वह अपने सामर्थ्य का लोहा मनवा रहा है । दुनिया के सामने उदाहरण बन रहा है पर अपने ही देश में हाशिये पर फेंका जा रहा है । काश अपने देश में उसे मौके मिलते तो वह ना पलायन करता और ना ही योग्य होकर अयोग्यता का अभिशाप ढोता । इस दुखद पहलू पर देश के नीतिनिर्धारको को पुर्नचिवचार कर युवा नीति बनानी होगी युवाओ को तरक्की के रास्ते खुल सके । ग्राम प्रधान से

लेकर सांसद तक के चुनाव लड़ने के लिये शिक्षा का स्तर सुनिश्चित होना चाहिये । बार–बार चुनाव लड़ना और मन्त्रीपद हथियाना बपौती नही होनी चाहिये । नौकरी से रिटायरमेण्ट की तरह राजनीति से भी रिटायरमेण्ट की उम्र निश्चित होनी चाहिये । इससे युवाओं का विकास सुनिश्चित होगा । युवा हाथों में कमान राष्ट्रीय उत्थान का मन्त्र तो है परन्तु उक्त आहवहन का क्रियान्वयन हो तब ना ।

सत्य, प्राचीन और न ही आधुनिक समाज का सम्मान करता है । समाज को ही सत्य का सम्मान करना पड़ता है । यदि सत्य का सम्मान नही किया गया तो समाज के विनाश की पूरी संभावना रहती है।सत्य ही मानव समाज का मूल आधार है,अतः सत्य कभी समाज के अनुसार नही ढलता समाज को सत्य के अनुसार ढलना पड़ता है,जो समाज सत्य का अनुसरण कर जाता है वही समाज श्रेष्ठ होकर दुनिया के सामने आदर्श निरूपित हो जाता है परन्तु भारतीय परिवेश में ऐसी राजनीति घुसपैठ कर गयी है कि सत्य को पूरी तरह अनदेखा किया जा रहा है, हमारे देश के युवा का भी हित इससे बुरी तरह प्रभावित हुआ है । खेद का विषय है कि हमारे देश में युवा नीति नही लागू है । कहा जाता है कि आज का बालक कल का नागरिक परन्तु बालको के हितार्थ कोई ठोस कानून नही है । स्वास्थ,शिक्षा से सरकार का कोई सरोकार नही है। सम्पन्न अभिवावक तो अपने बच्चों के भविष्य संवार लेते है परन्तु अक्षम अभिवावक अपने योग्य होनहार बालको का भी भविष्य कैसे संवार सकते है उनके आगे तो रोटी का ज्वलन्त सवाल खड़ा रहता है । ऐसे बालको की फौज खुद का और देश का कैसे विकास कर सकेगी ? यह चिचारणीय विषय तो है पर सत्ता का सुखभोग रहे कब्र में पांव लटकाये लोग कब सोचेगे उनके पास तो अपने हित के अलावा देश और युवाओ का हित तो सूझता ही नही । देश के नवजवानों का नेतृत्व तो समाज एवं राष्ट्रहित को समर्पित युवा दिग्दर्शक ही कर सकते है, जिनमें दूरदृष्टि,पक्का इरादा, कडी मेहनत ,अनुशासन, राष्ट्रीय उत्थान, समभाव एवं जाति धर्म से उपर उठकर बहुजन हिताय का जज्बा हो परन्तु यह भी विचारणीय मुद्दा है उनके हाथ लगाम आये तब ना भला होगा ।

मुझे स्वामी विवेकानन्दजी का एक अमृत वचन हमेशा सचेत करता रहता है पर हम इतने सौभाग्यशाली नही, सौभाग्यशाली सत्ताधीशों को शायद को शायद इससे सरोकार नही होता होगा कि, हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढें, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा होना सीखे । दुर्भाग्यवस नैतिकदायित्व,नैतिक मूल्य और बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का भाव तो वर्तमान समय में ताख पर रखा जा चुका है । आज भले ही अंधेरे के आगोश में उजाला है परन्तु कल सूर्य शौर्यमान तो होगा । युवा विकास के लिये सत्ता के गलियारे में मंथन होगा और युवा विकास हेतु समान शिक्षा के अधिकार एवं योग्यतानुसार रोजगार गारण्टी की नीतियां बनेगी । विकास की बांट जोह रही युवाशक्ति राष्ट्र एवं भारतीय समाज के हित में विकास कार्य कर इतिहास रचेगी । सही मायने में तभी भारत को युवा कहना उचित होगा ।यदि ऐसा हो गया तो दुनिया के सामने भारतीय युवा कमान राष्ट्रीय उत्थान का नारा विश्व के लिये मील का पत्थर साबित होगा ।